हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला द्वारा “प्रकृति” कार्यक्रम के अंतर्गत केन्द्रीय विद्यालय, जतोग छावनी, शिमला, हि॰प्र॰ में जागरूकता अभियान का आयोजन

“प्रकृति” कार्यक्रम के अंतर्गत हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला ने केंद्रीय विद्यालय, **जतोग छावनी**, **शिमला**, **हि॰प्र॰** के 9 वीं से 10+2 तक के विद्यार्थियों के लिए वानिकी तथा पर्यावरण के बारे में जागरूक करने के उद्देश्य से दिनांक **30 जनवरी 2019** को एक कार्यक्रम का आयोजन किया जिसमें 80 विद्यार्थियों ने भाग लिया। कार्यक्रम के प्रारंभ में **डॉ रंजीत कुमार**, वैज्ञानिक-ई, हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला ने केन्द्रीय विद्यालय के विद्यार्थियों व संकाय सदस्यों को पॉवरपॉइंट प्रस्तुति के माध्यम से **हिमालयन वन अनुसन्धान संस्थान, शिमला** के बारे में जानकारी देते हुए बताया कि यह संस्थान पश्चिमी हिमालय राज्यों - हिमाचल प्रदेश तथा जम्मू-कश्मीर में वानिकी एवं वानिकी अनुसन्धान तथा पर्यावरण सरंक्षण के क्षेत्र में महत्वपूर्ण कार्य कर रहा है व संस्थान द्वारा की जा रही अनुसंधान एवं विस्तार गतिविधियों के बारे में भी विद्यार्थियों को विस्तार से अवगत कराया।

डॉ कुमार ने पॉवरपॉइंट प्रस्तुति के माध्यम से विद्यार्थियों को **‘वन एवं जैवविविधिता’** पर प्रस्तुति दी। अपनी प्रस्तुति में उन्होंने भारत में पाये जाने वाले विभिन्न जैवविविधिता हॉट स्पॉट पर भी विस्तृत जानकारी प्रदान की । उन्होंने बताया कि भारत में 4 जैव विविधता वाले प्रमुख क्षेत्र है इनमें हिमालय, पश्चिमी घाट, इंडो-बर्मा क्षेत्र और सुन्दालैंड (निकोबार द्वीप समूह) सम्मलित हैं।

इस अवसर पर **श्री सुनील कुमार**, पी॰जी॰टी॰, जीव विज्ञान ने हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला से आए वैज्ञानिक **डॉ रंजीत कुमार** तथा **श्री श्याम सुन्दर**, तकनीशियन का धन्यवाद करते हुये कहा कि उनके द्वारा दी गयी जानकारी से छात्र निश्चित रूप से लाभान्वित होंगे तथा आशा व्यक्त की कि भविष्य में भी इस तरह के कार्यक्रम का आयोजन समय-समय पर करते रहेंगें। विद्यालय के प्रधानाचार्य **श्री वीर चंद** ने भी दी गयी जानकारी कि सराहना की तथा आग्रह किया कि संस्थान द्वारा आने वाले समय में भी इस तरह की गतिविधियां करवाई जायेंगी। उन्होनें इस तरह के आयोजन करने के लिए *भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद्*, देहरादून, के महानिदेशक तथा हिमालयन वन अनुसन्धान संस्थान, शिमला के निदेशक का आभार व्यक्त किया।

<u>कार्यक्रम की कुछ झलकियाँ</u>

****